Vol. IX
Number-4

ISSN 2319-7129
(Special Issue) January, 2018

UGC Notification No. 62981

# EDU WORLD

A Multidisciplinary International
Peer Reviewed/Refereed Journal

APH PUBLISHING CORPORATION

Scanned by CamScanner

ISSN : 2319-7129

# EDU WORLD

## A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

Vol. IX, Number - 4 January, 2018

(*Special Issue*)

*Chief Editor*

**Dr. S. Sabu**

Principal, St. Gregorios Teachers' Training College, Meenangadi P.O.,
Wayanad District, Kerala-673591. E-mail: drssbkm@gmail.com

*Co-Editor*

**S. B. Nangia**

**A.P.H. Publishing Corporation**
4435–36/7, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi-110002

Scanned by CamScanner

# CONTENTS


Role of Distance Education in Promoting Professional Growth of Teachers — 1
***Dr. V.V. Sailaja and Koyyani Virija***

A Critical Investigation of the Importance of Different Science Activities in Teaching of Biological Sciences in Secondary School — 4
***Dr. V.V. Sailaja and Koyyani Virija***

A Study on Students Satisfaction of Facilities at Primary Schools in Krishna District — 8
***Dr. V.V. Sailaja and Koyyani Virija***

Remedial Strategies for Reducing the Learning Difficulties of Grade Seventh Slow Learners in Science — 13
***Dr. Vipinder Nagra***

The Synthesis of Semiconducting Li-Cd Ferrite and it's Magnetic Study — 18
***B. B. Navale, J. V. Thombare, R. A. Bugad, A.R. Babar and B. R. Karche***

A Study on the Linkage Between Learning Enabling Structure and Work Engagement Neo Structure Constrction Limited Gujarat — 24
***Nair Beenu Babu and K. Govindankutty***

Determination Carbendazim Tolerance Capability of *Alternaria Polianthi* Causing Leaf Spot of Tuberose — 36
***Mahendra Basappa Waghmare***

Impact of Chemical Pesticides on Biodiversity and Human Health — 40
***A.C. Ade***

Construction and Try out of Concept Attainment Model for Some Units of Business Organization and Management of Standard XI — 46
***Jaydev V. Muliya***

A Study of Computer Aptitude of Higher Secondary School Students in Relation to Certain Variables — 51
***Jaydev V. Muliya***

Sree Narayana Movement and the Social Transformation of Modern Kerala: Locating the Role of Democratic Discourses Within the Community — 56
***Dr. Shaji A.***


Scanned by CamScanner

Development Communication a Tool for the Social Change and Nation Development 285
***Tara Hetta***

A Spatio-Temporal Analysis of Urbanization in Panchkula, Haryana (India) 292
***Dr. Rina and Dr. Rohtas Godara***

Application of Linear Programming in Food Business 303
***Dr. Smt. Megha Abhiman Bhamare***

An Action Research to Study the Perceptions of the Pupils About the Basic Concepts of Mathematics Operations in Class IX Standard 307
***Rakesh Chowdhury and Mukta Mondal***

Measurement of Inverse Creeps in Nylon Multifilament Yarns 315
***Pratap G. Patil***

रघुवीर सहाय की रचनाओं में लोकतंत्र की यथार्थ छवि 322
***डॉ. जया सिंह और श्रीमती जिज्ञासा पटेल***

रघुवीर सहाय की रचनाओं में समाज की झलक 326
***डॉ. जया सिंह और श्रीमती जिज्ञासा पटेल***

प्रेम की पीर के अमर गायक कबीर 329
***डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे***

हिन्दी कथा साहित्य में महिला लेखिकाओं का योगदान 336
***प्रशान्त कुमार सिंह***

Guidelines for Contributors 341

Scanned by CamScanner

# प्रेम की पीर के अमर गायक कबीर

डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे*

**शोध सारांश**

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल को स्वर्ग युग कहा गया है। इसमें चार धाराएँ हैं जिनमें सगुण में राममार्गी और कृष्णमार्गी हैं तथा निर्गुण में ज्ञानमार्गी और प्रेममार्गी हैं। कबीर को ज्ञानमार्गी शाखा का प्रमुख कवि माना गया है। कबीर की कविता, साधना, व्यक्तित्व और अनुभूति में प्रेम का उदान्त चित्रण है, संयोग की मर्यादा परम ऊँचाई को छूती है तो विरह पीड़ा की मार्मिकता परम गहराई का स्पर्श देती है। कबीर चदरिया बुनते हैं प्रेम से, साधना (सहज) करते हैं प्रेम से, बाजार में प्रेम से, सुमिरन में प्रेम से, लोक के साथ प्रेम से, जीवात्मा के साथ प्रेमपूर्ण ढंग से और परमात्मा के साथ भी प्रेम की पवित्रतम ऊँचाई के साथ होते हैं। उनके काव्य में प्रेमी (परमात्मा) और प्रेमिका (जीवात्मा) के बीच जो भगवत प्रेम है वह लौकिक और अलौकिक दोनों दौड़ने वाला कबीर साहेब के विरह में बच्चों जैसा फूट–फूटकर रोता है।

**बीज शब्द** – ढाई आखर प्रेम का, अकथ कहानी, प्रीतम, भरतार, बहुरिया, रामपियारे, राम रसायन, प्रेम रस, हिरदा भीतर, दौं बूंद, समन्द, खाला का घर, शीष।

## प्रस्तावना

कबीर के जन्म, जीवन, कवि–कर्म के संबंध में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद हैं। वे ज्ञान, योग, साधना, गुरू परम्परा के संवाहक हैं। वे बाजार के कुशल कारीगर, उत्पादक, विक्रेता हैं। वे एक भक्त हैं। वे समाज सुधारक भी हैं और महाकवि भी। उनकी कविता को कुछ समीक्षकों ने तवज्जो नहीं दिया। हालांकि उनकी प्रतिभा को नकारने का साहस किसी में भी नहीं। उनका कवि–कर्म कोई तुकबंदी या नारा नहीं है। कुछ लोग कबीर को 'स्लोगन राइटर' के रूप में चिन्हिन करना चाहते हैं। क्योंकि कबीर एक परम्परा से आते हैं उनके साथ एक विचारधारा चलती है। यह विचारधारा बौद्ध से सिद्धों, नाथों से गुजरते हुए हीनयान, महायान, वज्रयान की उपरांत गोरख से सहजयान के रूप में कबीर तक आती है। ये सिद्ध और नाथ, मूर्तिपूजा, वेदशास्त्र, कर्मकाण्ड, पुरोहितवाद, वर्णव्यवस्था, ऊँच–नीच के विरोधी थे और समानता के पक्षधर थे। कबीर इस समतामूलक व्यवस्था के प्रतिनिधि स्तंभ थे इसलिए तथाकथित विद्वानों का उनसे असहमत होना स्वाभाविक है। उनकी कविता आज भी बयाँ करती है कि कबीर की रचनाधार्मिता अत्यंत उच्चकोटि की है पर हीरे की परख करने के लिए जौहरी की प्रतिभा चाहिए। कबीर की कविता में उनका समय है, साधना की अवस्थाएँ हैं, रहस्य है, उलटबांसी है,

*सहायक प्राध्यापक, हिन्दी शास. महाविद्यालय, सनावल, जिला-बलरामपुर (छ.ग.)।



Scanned by CamScanner

कहने का अनूठा ढंग है, पीड़ा है, व्यथा है, आक्रोश है, प्रेम है, आनंद है, क्या नहीं है? पर एक कवि, भक्त, समाज सुधारक के व्यक्तित्व और कृतित्व के मूल में प्रेम है, प्रेम की पीर है।

**कवि कबीर** – पंत ने लिखा है –

"वियोगी होगा पहला कवि, आह से निकला होगा गान।
उमड़कर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान।।"

अर्थात वियोग (प्रेम) की पीड़ा ही कविता के जन्म का कारण मानी जाती है। तब इतना बड़ा कालजयी रचनाकार भला प्रेम और पीड़ा की अभिव्यक्ति से अस्पर्शित कैसे रह सकता था। कबीर एक जाग्रत चेतना हैं, वे केवल चिन्गारी नहीं बल्कि दहकते हुए अंगारे हैं। उनके भीतर मानवता और प्रेम की आग निरंतर जलती रही है। हालांकि उन्होंने जीवन को क्षण भंगुर माना है –

"पानी केरा बुदबुदा, अस मानुस की जात।
देखत ही छिप जाएगा, ज्यूं तारा परभात।।"

पर इसी क्षण भंगुर जीवन में उन्होंने परम सार्थकता की खोज की और कहा – "हम न मरि हैं संसारा, हमकूं मिल्या जियावनहारा"। यही नहीं उन्होंने जीवन को परम आदर दिया, और इस श्रेष्ठ देह से श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा दी –

"मनिषा जनम दुर्लभ है, देह न बारंबार।
तखर ते फल झड़ि पड्या, बहुरि न लागै डार।।" (1)

कबीर तो प्रेमी आदमी हैं और प्रेमी व्यक्तियों को ही ढूंढ रहे है –

"कबीर प्रेमी ढूंढत मै फिरूं, प्रेमी मिले न कोइ।
प्रेमी कूं प्रेमी मिलै तब, सब विष अमृत होइ।।" (2)

यहाँ कबीर का प्रेम मांसल नहीं है बल्कि यह प्रेम मानवता से परिपूर्ण है जिसे कहा गया है– इंसान का इंसान से हो भाईचार।

कबीर ने ऊँच–नीच, हिन्दू–मुस्लिम के भेदभाव पर जो तीखी फटकार लगाई है, वह उनके अंतस से उपजे अगाध प्रेम का ही परिणाम है। उनमें प्रेम तत्व की धारा गहनतम, सघनतम और चिरंतन रूप में प्रवाहित होती दिखाई देती है। वे विद्रोही, क्रांतिकारी या फटकार लगाने वाले ही नहीं हैं बल्कि प्रेम का अविरल स्रोत भी उनसे फूटता है और प्रेम के ढाई आखर की कितनी गरिमा और महिमा है, यह भी वे बताते हैं –

"पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।" (3)

अर्थात ज्ञान, ध्यान और जीवन का अध्ययन बिना प्रेम के सफल नहीं हो सकता यहाँ कबीर ज्ञान प्राप्ति के सूत्र देते हुए किताब से ज्यादा प्रेम के ढाई आखर पर जोर दे रहे हैं। यह प्रेम जीवन और व्यक्तित्व का रूपांतरण कर पाने में सक्षम है। उनके इस प्रेमभाव का कायल कौन नहीं है।

आचार्य शुक्ल ने भी उनकी प्रेमभावना की सराहना की है – "कबीर का ज्ञानपथ तो रहस्य और गुह्य की भावना से विकृत मिलेगा, पर सूफियों से जो प्रेम तत्व उन्होंने लिया, वह सूफियों के यहाँ चाहे काम–वासना–ग्रस्त हो, पर 'निर्गुण पंथ' में अविकृत रहा। यह निःसंदेह प्रशंसा की बात है।" (4) यह प्रेम तत्व श्रृंगार के उभय

Scanned by CamScanner

पक्षीय चित्रण (संयोग एवं वियोग) में उत्कृष्ट रूप के साथ अभिव्यंजित हुआ है। अन्यायी को ललकारने वाले कबीर विरह पीड़ा में कितने असमर्थ हो जाते हैं इसकी हृदयबेधक मार्मिक अभिव्यक्ति देखिए –

"आई न सकौं तुज्झ पै, सकूं न तुज्झ बुलाइ।
जियरा यों ही लेहुगे, विरह तपाइ तपाइ।।" (5)

इसमें प्रेम की तीर नितांत निजी है पर लौकिक काम का स्पर्श तक नहीं है। कबीर का प्रेम ईश्वर भक्ति का साधन तो है ही बल्कि उसका अपने आप में भी कोई स्वतंत्र मूल्य है, इस अर्थ में प्रेम के प्रेम रूप में गरिमा से परिपूर्ण अनुभूति की पहली कविता हिन्दी में कबीर की मानी गई –

"प्रेम न बारी उपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा–परजा जेहि रूचै, सीस देइ लै जाय।।" (6)

कबीर प्रेम को बहुत ऊँचाई पर प्रतिष्ठित करते हैं –

"यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहिं।
सीस काटि भुइया धरो तब पैठो घर माहिं।।"

प्रेम निःस्वार्थ है पर मुफ्त नहीं है, प्रेम की कीमत है, वह बहुमूल्य है, अनमोल है, सिर सौंपकर (अहंकार त्यागकर) ही पाया जा सकता है।

कबीर कहते हैं – कबीरा भाटि कलाल की बहुतक बैठे आइ।
सिर सौंपे सोई पियै, नहि तो पिया न जाइ।।

कबीर जिस प्रेम की बात कर रहे हैं वह विशुद्ध प्रेम है, उसमें कोई सौदेबाजी चालबाजी नहीं चल सकती, वहाँ तो अहंकार भी नहीं टिक सकता, कबीर की प्रेम गली इतनी संकरी है कि नफरत या घमण्ड के लिए जगह नहीं है –

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहि।
प्रेम गली अति सांकरी, जा मे दो न समाहिं।।

रामधारी सिंह दिनकर लिखते हैं – कबीर ने प्रेम को केवल स्वतंत्र मूल्य ही नहीं माना उनकी अपनी प्रेम–पीड़ा की अनुभूति में भी एक नई भंगिमा दिखाई देती है, एक तड़प मिलती है, जो हिन्दी के लिए, बहुत दूर तक, नई चीज थी। (7) कई समीक्षक जायसी के 'नागमति विरह वर्णन' को तो हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि कहते हैं पर कबीर के इस प्रेम की पीर की तरफ उनका ध्यान ठीक से नहीं जा पाता। कबीर के काव्य में विरह के विविध पक्ष हैं। उनकी पीड़ा देखिए वे हाल तक बयाँ नहीं कर पा रहे –

अंबर कुंजाँ कुरलियाँ, गरजि भरे सब ताल।
जिन थैं गोविंद बीघटे, तिनके कौण हवाल।।

उन्हें वियोग की पीड़ा में "आँखों में नीदें, न दिल में करार" जैसी स्थिति है –

बासुरि सुख नाँ रैणि सुख, नाँ सुखि सुपिनै माँहि।
कबीर बिछुट्या राम सूँ, ना सुख धूप न छाँहि।।

कबीर (जीवात्मा) अपने प्रियतम (परमात्मा) से मिलने को बेचैन हैं और जीवन के रहते–रहते मिलन की अभीप्सा है, मरने (समय निकल जाने) के बाद मिलन की कोई रूचि नहीं है –

"मूवाँ पिछे जिनि मिलै, कहै कबीरा राम।

Scanned by CamScanner

पाथर घाटा लोह सब, तब पारस कौणे काम।।"

प्रेम की विरह अवस्था में अपने प्रिय को किसी भी कीमत पर पाने की लालसा होती है, चाहे इसके लिए खुद को ही क्यों न मिटाना पड़ जाये, यही भाव कबीर में है जो उन्मत्त प्रेमी का लक्षण है –

"यहु तन जालौ मसि करूँ, ज्यूँ धुवाँ जाइ सरग्गि।
मति वै राम दया करैं, बरसि बुझावै आग्गि।।"

प्रेमी के विरह का बाण हृदय में लगा रहे तो उसकी याद और कसक बराबर बनी रहती है, इसलिए यह बाण कबीर को प्रिय है –

"जिहि सरि मारी काल्हि, सो सर मेरे मन बस्या।
तिहिं सरि अजहूँ मारि, सर बिन सचु पाऊँ नहीं।।"

यह विरह सर्प के रूप में शरीर में ऐसे प्रवेश कर जाता है कि किसी भी उपाय से बाहर नहीं निकलता। कबीर कहते हैं कि विरह की पीड़ा या तो मार डालती है या पागल बना देती है –

"विरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोई।
राम वियोगी न जिवै, जिवै तौ बौरा होई।।"

यह विरह की पीड़ा विरही के तन को तम्बूरे (इकतारा) के समान निरंतर वेदना से झंकृत करती रहती है और बड़े मजे की बात है कि यह विरही की पीड़ा विरही ही सुन सकता है –

"सब रँग तंत रबाब तन, विरह बजावै नित्त।
और न कोई सुणि सकै, कै साई के चित्त।।"

जैसे मीरा भी कहती है – 'हेरी मै तो प्रेम दीवानी, मेरो दरद न जाने कोय' यही नहीं उनकी पीड़ी का एक ही उपचार है – 'मीरा की प्रभु पीर मिटैगी, जब वैद सँवलिया होय'। इन मार्मिक भावों के पूर्ववर्ती पुरूष कबीर हैं जो विरह पीड़ा को माते नजर आते हैं।

कबीर के प्रेम में बेचैनी और छुटपटाहट तो है पर इंतजार का भी मजा है, प्रिय का इंतजार इतना है कि आखें थक जाती है और उसका नाम लेते लेते जीभ में छाले पड़ जाते हैं –

"अँखड़ियाँ झाँई पड़ी, पंथ निहारि–निहारि।
जीभड़ियाँ छाला पड्या, राम पुकारि–पुकारि।।" (8)

इस इंतजार के लिए आज की पंक्तियाँ हैं –

दिल दिया प्यार की हद थी, जान दी तेरे ऐतबार की हद थी।
मर गए हम खुली रहीं आँखें, ये तेरे इंतजार की हद थी।।

यह इंतजार इतना आसान नहीं होता, किसी शायर ने सच ही कहा है कि 'काटे नहीं करते ये लम्हें इंतजार के' बस ऐसे ही कबीर को भी विरह का सर्प रह रहकर डसता रहता है –

"बिरह भुवंगम तन डसा, किय करेजे घाव।
बिरहिन अंग न मोडिया, जित चाहो तित खाव।।"

कबीर विरहिणी की उस विरह पीड़ा का मार्मिक पर अलौकिक चित्रण करते हैं जो काम–दग्ध नहीं है बल्कि आत्मोत्सर्ग की भावना से प्रेरित है और स्वयं को दीपक की भाँति जला देना चाहती है, कामाग्नि में नहीं –

Scanned by CamScanner

"जा तन का दीवा करौं, बाती मेल्हूँ जीव।
लेही सीचौं तेल ज्यूँ, कब मुख दैखौं पीव।।"

वह रक्त के तेल से दिए जलाकर प्रियतम की प्रतीक्षा में रहा हैं। हिन्दी साहित्य में जायसी, विद्यापति या अन्य के श्रृंगार (संयोमन वियोग) जहाँ लौकिकता और मांसलता के पंक में धँसे हुए हैं वही कबीर का प्रेम वर्णन संसार के प्रतीकों के बावजूद कीचड़ में कमलवत है।

कबीर के विरह की पीड़ा का मर्म इस पंक्ति से समझाा जा सकता है जब वो कहते हैं कि अब विरह बर्दाश्त नहीं होता, आठों पहर विरहाग्नि में जलने से तो मर जाना बेहतर इसलिए ऐ प्रियतम या तो मुझसे आन मिलो या मुझे मार ही डालो –

"कै बिरहणि कूँ मीच दै, कै आपा दिखलाइ।
आठ पहर का दाझणाँ, मौपे सह्या न जाइ।।"

इस मर्मान्तक पीड़ा की अनुभूति व अभिव्यक्ति को न तो कोई पुरूष रचनाकार ने इस गहराई तक स्पर्श किया और न किसी स्त्री रचनाकार ने। कबीर का साधना पक्ष सहज, समाज सुधार का पक्ष कठोर और सहृदय कवि का पक्ष अत्यंत कोमल व संवेदनशील है। कबीर (जीवात्मा) बूंद है और परमात्मा प्रियतम समुद्र, प्रेम की मिलन में इतना एकाकार है कि बूंद और सागर एक हो जाते हैं –

"हेरत हेरत हे सखी, रह्या कबीर हिराइ।
बूंद समाणी समन्द में सो कत हेरी जाइ।।
हेरत हेरत हे सखी, रहया कबीर हिराइ।
समन्द समाणा बूंद मैं, सो कब हेरया जाइ।।"

कबीर के प्रेम वर्णन में नायक है, नायिका है, मिलन है, वियोग है, पीड़ा है, प्रतीक्षा है, पर देह की मांसलता, यौन, कामाग्नि, लौकिक विकृतियाँ नहीं हैं जो उनके प्रेम वर्णन को अनूठी और अद्वितीय बनाती हैं। साथ ही कबीर की विरहिणी की पीड़ा को साधारण जन समझ भी नहीं सकते, 'घायल की गति घायल जाने' वाली स्थिति है –

"हिरदा भीतरि दौ बले, धुवाँ प्रगट न होइ।
जाकै लागी सो लखै, कै जिहि लाई सोइ।।"

यह प्रेम की उच्चतम, उत्कृष्ठ अवस्था है। यह प्रेम का रस, रामरसायन है जो पीने में और भी स्वादिष्ट लगता है –

"राम रसाइण प्रेम रस, पीवत अधिक रसाल।
कबीर पीवण, दुर्लभ है माँगै सीस कलाल।।"

हजारी प्रसाद द्विवेदी मानते हैं कि कबीरदास की भक्ति–साधना का केन्द्र प्रेम–लीला है। इस लीला का जो स्वरूप कबीरदास ने उपस्थित किया है, वह बहुत व्यापक और विशाल है। [9] कबीर के प्रेम को उन्होंने भगवत्प्रेम माना है। विद्वानों का यह भी मत है कि कबीर की रचनाओं में सिद्ध, नाथ, वैष्णव और सूफी प्रभाव है। सिद्धों से वेद एवं वर्णव्यवस्था का विरोध, नाथों से हठयोग, वैष्णवों से सहज साधना और सूफियों से प्रेमतत्व कबीर को मिला ऐसी मान्यता है। हालांकि इसमें से सिद्ध और नाथ का प्रभाव तो स्पष्ट

Scanned by CamScanner

है पर कुछ तत्य आरोपित हैं ऐसा लगता है। कबीर का प्रेम विशुद्ध प्रेम है तथा किसी से प्रेरित या प्रभावित हो ऐसा प्रमाण सिद्ध नहीं। सूफियों का प्रेम उफनती नदी है और कबीर सागर की गहराई में अलौकिकता के धरातल पर स्थित हैं –

"कबीर निज घर प्रेम का, मारग अगम अगाध।
सीस उतारि पगतलि धरै, तब निकटि प्रेम का स्वाद।।" (10)

कबीर का प्रेम एकनिष्ठ प्रेम है, वह आज की तरह अवसरवादी और स्वार्थपूर्ण प्रयोजनों से बहुत दूर है–

"कबीर रेख सिन्दूर की, काजल दिया न जाइ।
नैनू रमइया रमि रहा, दूजा कहाँ समाइ।।"

यह प्रेम बहुत गहरा है, अटूट है, यह खंडित अथवा बदलता हुआ नहीं है। कबीर का प्रेम वर्णन प्रेम की पूरी गरिमा और महिमा तक पहुँचता है। उनकी नायिका प्रेम के क्षणों में भी लोकलाज, मर्यादा नहीं भूलती –

"लोक लाज कुल की मरजादा देखत मन सकुचाय।
नैहर–बास बसौं पीहर में, लाज तजी नहिं जाय।।"

कबीर के प्रेम–चित्रण में मिलन का उल्लास और आनंद है, अश्लीलता नहीं। प्रियतम का स्वागत भी एक उत्सव है –

"दुलहनी गावहु मंगलाचार
हम घरि आए हो राजा राम भरता।"

क्योंकि बहुत दिनों बाद मिलना हो रहा –

"बहुत दिनन थैं मैं प्रीतम पाये, भाग बड़े घरि बैठे आये" (11)

अब प्रिय से बिछड़ने या उसे दूर जाने देने का मन नहीं है –

"अब तोहि जान न देहूँ राम पियारे, ज्यूँ भावै त्यूँ होहु हमारे" (12)

कबीर का प्रेम भक्ति के साथ चलता है, वह उद्वेलित नहीं करता बल्कि आत्मा को विश्राम देता है –

"हिंडोलना तहाँ झूलै आतम राम।
प्रेम भगति हिंडोलना, सब संतन कौ विश्राम।।" (13)

यह प्रेम भक्ति का दूसरा नाम है, इसे भक्तिमय प्रेम या प्रेममय भक्ति कहना ज्यादा ठीक रहेगा। कबीर के प्रेम तत्व पर कुछ भी कहना सूरज को दीपक दिखाने जैसा है। यह इतनी गहरी अनुभूति का विषय है कि अव्यक्त सा रह जाता है। शायद इसीलिए कबीर पर विस्तार से लिखी गई अपनी किताब का शीर्षक पुरूषोत्तम अग्रवाल ने 'अकथ कहानी प्रेम की' रखा है। कबीर के शब्दों में यह गूंगे का गुड़ है, जहाँ गहन मिठास के स्वाद की मीठी अनुभूति तो है पर शब्द नहीं है कि व्यक्त किए जा सकें –

"अकथ कहाणी प्रेम की, कछू कही न जाई।
गूंगे केरी सरकरा, बैठा ही मुसकाई।।" (14)

कबीर का प्रेमतत्व 'भरी गगरिया चुप्पे जाय' की भाँति गहन, सघन गंभीर है, वह लहर नहीं सागर है, उसमें गहराई है। कबीर मानते हैं कि प्रेम में पीड़ा आवश्यक है तभी प्रिय के लिए आकुलता, व्याकुलता और पुकार जन्म लेती है। कबीर की पुकार इसी प्रेम की पीर से उत्पन्न होती है –

Scanned by CamScanner

"कबीर पढ़िवा दूरि करि, आथि पढ़या संसार।
पीड़ न उपजी प्रीति सू, तौ क्यों करि करै पुकार।।" (15)

## निष्कर्ष

कबीर का कविता कर्म विविध आयामों से विस्तृत और सम्पुष्ट है। उनकी कविता के केन्द्र में प्रेमतत्व है। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का आधार भी प्रेम ही है। प्रेम का आदर्श और उत्कृष्ट चित्रण उनकी मौलिक विशेषता है। उनका प्रेममय व्यक्तित्व, प्रेममय भक्ति, प्रेममय आचरण, प्रेममय व्यापार, प्रेममाय सृजन और प्रेममय जीवन परिलक्षित होता है। प्रेम के संयोग व वियोग दोनों पक्षों का सुन्दर चित्रण है पर वियोग पक्ष पर उनकी मर्मस्पर्शी संवेदना झकझोरती है। विरह वेदना में कबीर सिसकते या कराहते नहीं बल्कि निर्दोष बच्चों जैसे चीख–चीखकर रोते हैं। प्रेम की पीड़ा और वेदना अपने विविध रूपों में उभरकर उनके काव्य में चित्रित होता है। उनका वियोग वर्णन हिन्दी साहित्या में अनूठा है। उनका प्रेमतत्व सर्वथा मौलिक है जो उनकी सहृदयता का प्रमाण है। निश्चित ही कबीर प्रेम की पीर के अमर गायक हैं जो गृहस्थ व सन्यासी सबका मार्गदर्शन करते हैं। भले ही उन्हें ज्ञानमार्गी शाखा का प्रमुख कवि माना गया है परंतु उनका तो समूचा ज्ञान ही प्रेम की पटरी पर दौड़ता है। कबीर और प्रेम एक–दूसरे के पर्याय हैं।

## सन्दर्भ सूची


1 सिंह, डॉ. तेज. *सबद बिबेकी कबीर,* भावना प्रकाशन दिल्ली, 2004, पृष्ठ 160
2 वही, पृष्ठ 160
3 वही, पृष्ठ 160
4 गुप्ता, डॉ. रामविलास, वीना गुप्ता *हिन्दी साहित्य,* कमल प्रकाशन नई दिल्ली, नवीन संस्करण, पृष्ठ 77
5 वही, पृष्ठ 78
6 दिनकर, रामधारी सिंह. *संस्कृति के चार अध्याय,* लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, 2013, पृष्ठ 318
7 वही, पृष्ठ 318
8 वही, पृष्ठ 318
9 द्विवेदी, हजारी प्रसाद. *कबीर,* राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ 148
10 वही, पृष्ठ 155
11 दास, डॉ. श्यामसुंदर. *कबीर ग्रंथावली,* लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, 2015, पृष्ठ 117
12 वही, पृष्ठ 117
13 वही, पृष्ठ 122
14 अग्रवाल, पुरूषोत्तम. *अकथ कहानी प्रेम की (कबीर की कविता और उनका समय),* राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2010, पृष्ठ 423
15 वही, पृष्ठ 435


Scanned by CamScanner